वाह, मम्मी-पापा भी बन गये बच्चे

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव में बड़ों को भी बच्चा बनने का अवसर मिल रहा है। रविवार को ऐसा ही अवसर केएन उडुप्पा सभागार में चिल्ड्रेन फिल्म सोसायटी ऑफ इंडिया, मुंबई के बाल फिल्म महोत्सव के दौरान नुमाया हुआ। इसमें बच्चों के साथ उनके मम्मी-पापा ने भी बिना पलक झपकाए फिल्में देखीं और खूब खिलखिलाए भी।

महोत्सव की शुरुआत में बीएचयू के केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों को राजन खोसा की फिल्म गट्टू दिखाई गई। फिल्म की कहानी एक काली पतंग के इर्दगिर्द चलती है। पतंग सब पर भारी है। उसे कौन उड़ा रहा है; यह किसी को पता नहीं है। गट्टू जानकारी करने की चुनौती स्वीकार करता है और अंत में सफल भी होता है। संदेश उभरा कि सपने कभी असंभव नहीं होते, बशर्ते उन्हें हकीकत में बदलने के लिए हृदय में दृढ इच्छाशक्ति हो।

फिल्म महोत्सव

- गारू : द जर्नी ऑफ करेज और गट्टू का हुआ प्रदर्शन
- फिल्मों ने दिया दृढ़ संकल्प शक्ति और साहस का संदेश
- चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी ने जारी किया मोबाइल ऐप

फिल्म गट्टू का हुआ प्रदर्शन।

दूसरी फिल्म 'गारू- साहस की यात्रा' में दिखाया गया कि बच्चा 'गारू' किस तरह अपनी दादी की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए कितना बड़ा जोखिम उठाता है। उसकी दादी को गांव जाना है। रेगीस्तानी रास्ता न तो आसान है और न ही दूरी कम है। रेगिस्तान में गारू बहन और 60 भेड़ें लेकर चलता है। विपरीत परिस्थितियों में वह अंततः गांव तक पहुंचता है। यह कहानी युवाओं को साहस का संदेश देती है। रविवार को दूसरी फिल्म हैप्पी मदर्स डे का प्रस्तुतिकरण होना था लेकिन सीडी न चलने के कारण फिल्म बदलनी पड़ी।

बनें लिटिल डायरेक्टरः कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सीएफएसआई के सीईओ श्रवण कुमार ने बच्चों से सीएफएसआई का ऐप डाउनलोड करने का सुझाव दिया। इसके माध्यम से लिटिल डायरेक्टर बनने के लिए आवेदन किया जा सकता है। चयनित बच्चों को 14 नवंबर को हैदराबाद बुलाया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक प्रो. आनंद चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।